भारतीय ज्ञानपरम्परा आधारित

संस्कृति बोधमाला १

प्रकाशक : विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरुक्षेत्र

संस्कृति बोधमाला

ॐ

मंगलाचरण

कौसल्या के प्यारे राम, दशरथ राजदुलारे राम।
अवधपुरी है पावन धाम, रामलला को करें प्रणाम।।

आचार्य–अभिभावक निर्देश

संस्कृति बोधमाला की यह पुस्तिका बाल मन पर भारतीय संस्कृति के संस्कार डालने के उद्देश्य से रची गई है। संस्कार डालने का दायित्व विद्यालय में आचार्य का और घर में अभिभावकों का है। अत: उनके लिए कुछ निर्देश यहाँ दिये जा रहे हैं –

१. इस पुस्तिका में परमेष्ठी से लेकर व्यष्टि तक अर्थात् भगवान व उसकी बनाई सृष्टि, उस सृष्टि में रहने वाला मानव समुदाय और उस समुदाय में पढ़ने वाले बालक–बालिकाओं के जीवन निर्माण से सम्बन्धित सामग्री, बाल गीतों के रूप में दी गई है। इस जगत में वह एक ईश्वर ही विभिन्न रूपों में व्यक्त हुआ है। सब रूपों में वह ईश्वर स्वयं आत्मतत्त्व के रूप में विद्यमान है। इसलिए जड़–चेतन सबके साथ हमें आत्मीयता का व्यवहार करना चाहिए और उनको सम्मान देना चाहिए। भैया–बहनों में यह आधारभूत संस्कार बचपन में ही डालना, हमारा काम है।

२. बाल गीतों को आचार्य सस्वर गाये और भैया–बहन उसे सस्वर दोहरायें। इन गीतों का अर्थ नहीं समझाएँ। इन गीतों को बार–बार गायें, अभिनय के साथ गायें, उन्हें ये गीत गाने में अपार आनन्द आए, इस दृष्टि से गायें।

३. गीत गाते समय बीच–बीच में विषय वस्तु से सम्बन्धित भगवान तथा महापुरुषों की कथाएँ भी सुनाते जाएँ। कथाएँ सुनाने का हेतु ईश्वर व महापुरुषों के प्रति उनमें श्रद्धा का भाव निर्माण हो, यह ध्यान रखें।

४. भगवान की बनाई प्रकृति में भगवान स्वयं हैं, इसलिए पृथ्वी को माता तथा जल, वायु, अग्नि व आकाश महाभूतों को देवता मानना, उनके प्रति पूज्यभाव निर्माण करना, इनका संरक्षण करना, इन्हें प्रदूषित नहीं करना आदि के संस्कार डालना हमारा परम कर्तव्य है।

५. दिनचर्या व सेवा से सम्बन्धित कार्यों को केवल बताना नहीं, उन्हें करने के लिए प्रेरित करना, जैसे — स्वच्छता, पवित्रता, सेवाभाव, देशभक्ति एवं अन्य सद्गुण उनके जीवन में उतरें, उनकी अच्छी आदतें बन जाएं तब तक करवाते रहना।

६. हमारी भारतमाता, हमारी मातृभाषा, हमारी वेशभूषा, हमारे त्योहार, हमारे शास्त्रग्रन्थों के प्रति स्वाभिमान व गौरव का भाव निर्माण हो, ऐसे प्रेरक प्रसंग उन्हें सुनाना।

७. इस पुस्तिका को केवल परीक्षा उत्तीर्ण करवाने वाली पाठ्यपुस्तक न मानकर संस्कार पुस्तिका मानना और उन्हें संगृहीत करने को बताना।

हमें यह पूर्ण विश्वास है कि आप इन निर्देशों के आधार पर भैया–बहनों में संस्कृति के संस्कार डालने में अवश्य सफल होंगे।

— प्रकाशक

भगवान

यह सारा सुंदर संसार
जिसके रूप हैं कई हजार।

दिखता अपने चारों ओर
बहुत बड़ा है ओर न छोर।

जिनने किया इसे निर्माण
उनको ही कहते भगवान।

ईश्वर के हैं रूप अनेक
पूजनीय हैं वे हर एक।

वे ही ब्रह्मा विष्णु महेश
दुर्गा सूरज और गणेश।

ले अवतार बने वे राम
बन जाते वे ही घनश्याम।

बुद्ध व महावीर भी नाम
नानक देव को करें प्रणाम।

सबका आदर सबका मान
रूप अनेक एक भगवान।

प्रकृति और पांच तत्त्व

परम पिता परमेश्वर सबके
प्रकृति है सबकी माता।
बनी हुई जिन पाँच तत्व से
उनसे सबका नाता।

भ से भूमि जहाँ हम रहते
ग से गगन नील आकाश।
व से वायु सांस जो बनती
आ से आग जो करे प्रकाश।
न से नीर जिसे जल कहते
पाँच तत्व कर लो पहचान।
सारी प्रकृति बनी इन्हीं से
इन सबमें भी है भगवान।।

स्वच्छ संतुलित रहें सभी ये
नहीं प्रदूषण फैलाएँ।
इसी प्रकृति से सबका जीवन
स्वयं समझकर समझाएँ।

पाँच ग : संस्कृति के मान बिन्दु

गौ की सेवा, गायत्री जप,
गीता जी का ज्ञान करें।
गंगा की पावनता मन में
श्री गणेश का ध्यान धरें।

संस्कृति के ये मान बिंदु हैं
इनका ज्ञान जरूरी है।
संस्कृति शिक्षा बिन जीवन की
सारी बात अधूरी है।।

भारत माता

इस धरती पर देश हैं जितने
पहला देश हमारा है।
युगों-युगों से विश्व गुरु यह
सारे जग से न्यारा है।

भारतवासी सदा-सदा से
इस धरती पर रहते हैं।
हम संतानें देश को अपने
भारत माता कहते हैं।

तीर्थ, पर्व त्यौहार कई हैं
भाषा वेष विविध प्यारे।
खान-पान के ढंग कई हैं
महापुरुष साझे सारे।

भारत अपना हम भारत के
एक यही अपनी पहचान।
भारत माँ पर अपना सब कुछ
कर सकते हैं हम बलिदान।

मातृभाषा

अपनी भाषा माँ होती है
हम इसका सम्मान करें।
इसे बोलना गर्व हमारा,
पढ़ते-लिखते ध्यान धरें।

कई हमारी भाषा बोली
संस्त, हिन्दी, गुजराती।
तमिल, तेलुगु, कन्नड़ प्यारी
मलयालम सबको भाती।

कहीं मराठी, कहीं असमिया,
उड़िया, सिंधी, नेपाली।
कश्मीरी, पंजाबी, बोडो
डोगरी, मैथिली, बंगाली।

और कई भाषा बोली हैं
सब भारत माँ की भाषा।
करें सभी भाषा का आदर
यह हमसे माँ की आशा।।

सनातन धर्म

सेवा, त्याग, समर्पण, संयम,
प्रेम और अपनापन है।
मानव के जीवन का यह ढंग,
सच्चा धर्म सनातन है।

सबका सुख, अपना सुख मानें
मानवता का मान करें।
निर्बल को यदि कोई सताए
रक्षा करना बिना डरे।

प्रकृति से जितना आवश्यक,
उतना आदर से लेना।
जिसे अधिक आवश्यक हमसे,
अपना भाग भी दे देना।।

पूजा पद्धति अलग-अलग पर
धर्म हमारा एक यही।
कई पंथ, मत हैं दुनिया में,
हिंदु धर्म-सा कोई नहीं।।

अच्छी बातें

जो सम्मान बड़ों का करते।
वे जीवन में आगे बढ़ते।।

मात-पिता गुरु और भगवान।
शीश झुका करना सम्मान।।

झगड़ा करें न भाई-बहना।
मित्रों से हिल-मिलकर रहना।।

पौधे सींचो, फूल उगाओ।
पंछी को दाने चुगवाओ।।

आसन, ध्यान और व्यायाम।
जीवनभर आते हैं काम।।

समझो पढ़ो सुनो रामायण।
अच्छे गीतों का हो गायन।।

दिनचर्या

प्रातः घर में

नित्य सुबह जल्दी जग जाना
धरती माँ को शीश झुकाना।

आशीर्वाद बड़ों से पाना
पानी पी फिर शौच को जाना।

अपने दांतों को चमकाना
बिना बहाना रोज नहाना।।

फिर शाला में

नित्य समय पर शाला जाना
सब गुरुजन को शीश नवाना।

जो भी पढ़ें, समझते जाना,
नहीं पूछने में घबराना।

कठिन पाठ फिर-फिर दुहराना
शाला से सीधे घर आना।।

शाला के बाद

बस्ता ठीक जगह रख आना,
फिर गणवेश बदलने जाना।

घर, शाला की बात बताना,
भूख लगे तब ही कुछ खाना।

मित्रों संग खेलने जाना,
शाम समय से घर आ जाना।।

सायं घर में

हाथ पैर धो दीप जलाना
'शुभं करोति' साथ में गाना।

ईश्वर का फिर भजन सुनाना
शान्त बैठकर ध्यान लगाना।

लिखना-पढ़ना गणित लगाना
कथा-कहानी सुन सो जाना।।

मेरा परिवार

मैं हूँ घर में सबका प्यारा।
दादी की आंखों का तारा।।
मेरी बहना सबको प्यारी।
माँ कहती हैं राजकुमारी।।
दादाजी से सुनें कहानी।
बातें अच्छी नई पुरानी।।

लाये पिताजी सब सामान।
वे रखते हैं सबका ध्यान।।
काका-काकी, ताऊ-ताई।
इनके बच्चे बहना-भाई।।
इक-दूजे के आते काम।
शान्त सभी रहते हर शाम।।

दीप, आरती, ईश्वर सुमिरन।
साथ-साथ करते हैं भोजन।।
साथ बैठकर करते बात।
कभी घूमने जाते साथ।।
ऐसा है मेरा परिवार।
बहुत सुखी, आनंद अपार।।

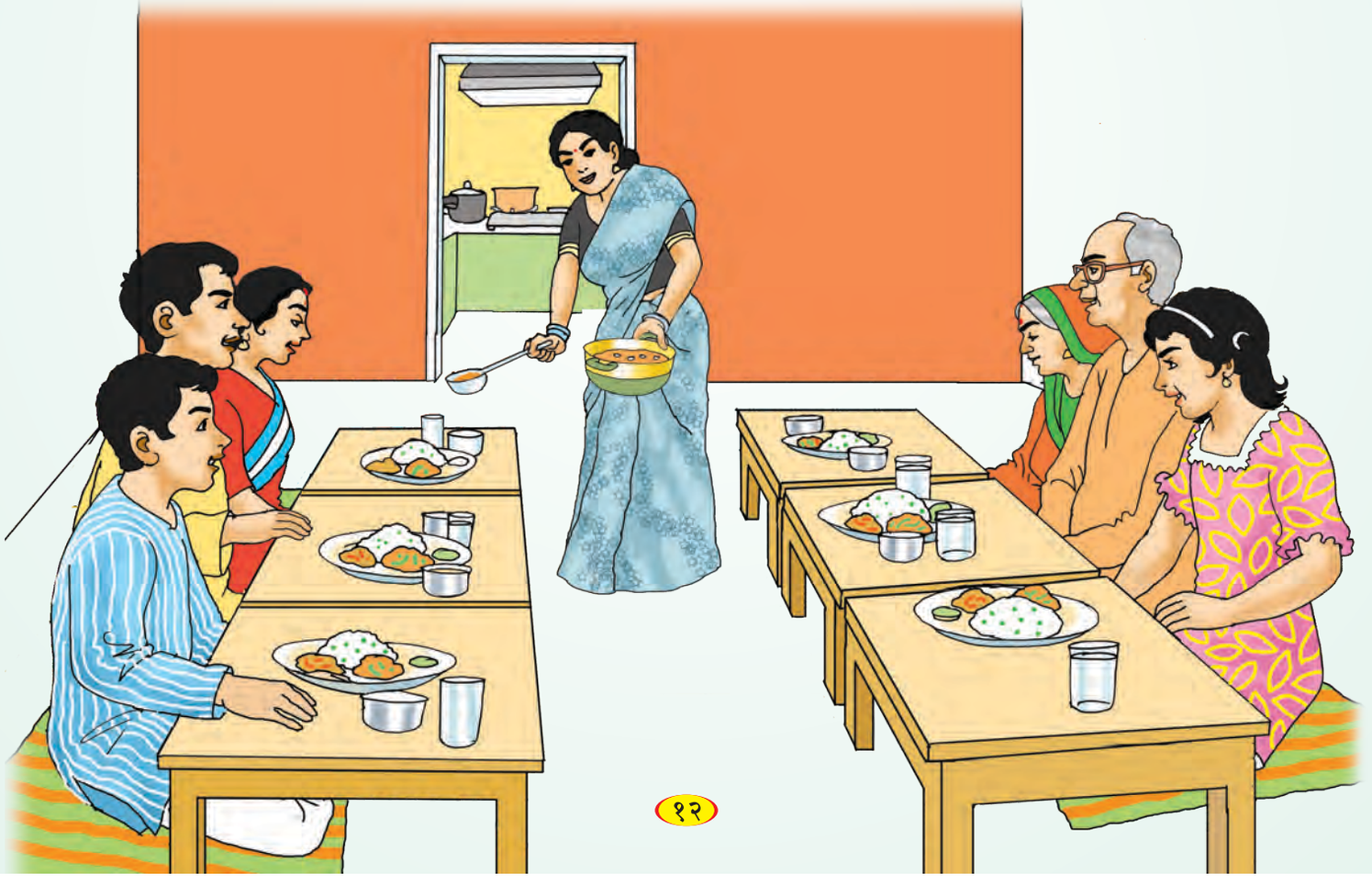

सदाचार

नहीं बड़ों को कभी बुलाना
लेकर उनका नाम।

आयें अतिथि तो स्वागत करना
करके उन्हें प्रणाम।

बिन पूछे कोई भी वस्तु
नहीं किसी की लेना।

अगर किसी को आवश्यकता
तो सहायता देना।

चुगली करना नहीं किसी की
करना नहीं बुराई।

काम बताए कोई हमें तो
नहीं टालना भाई।

जीव जंतु पर दया दिखाना
उनको नहीं सताना।

अच्छी कथा-कहानी पढ़ना
अच्छे मित्र बनाना।।

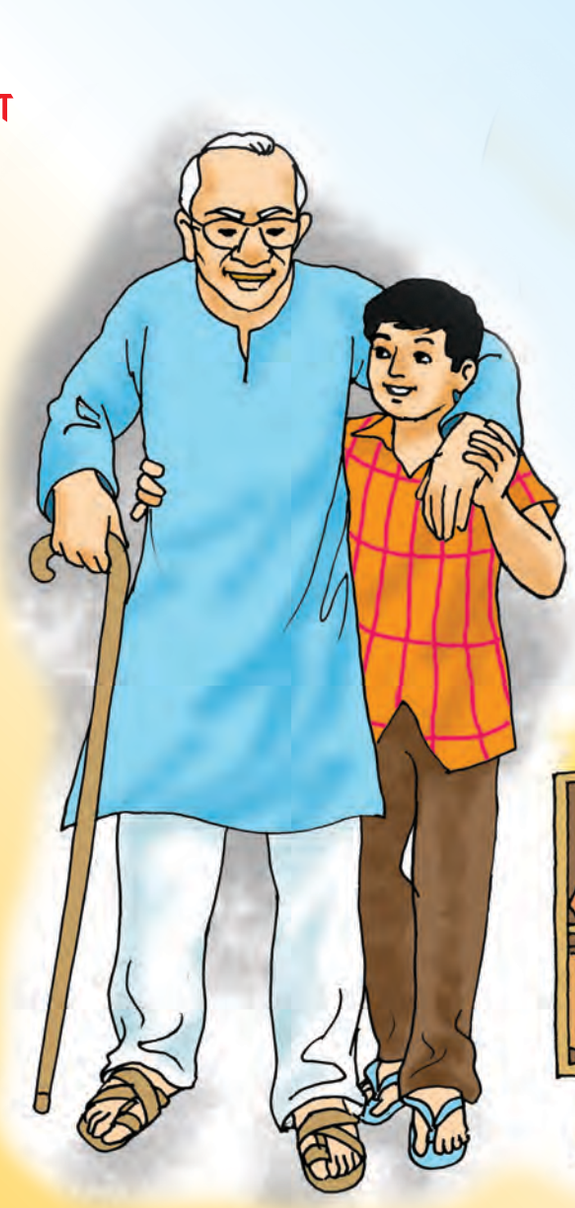

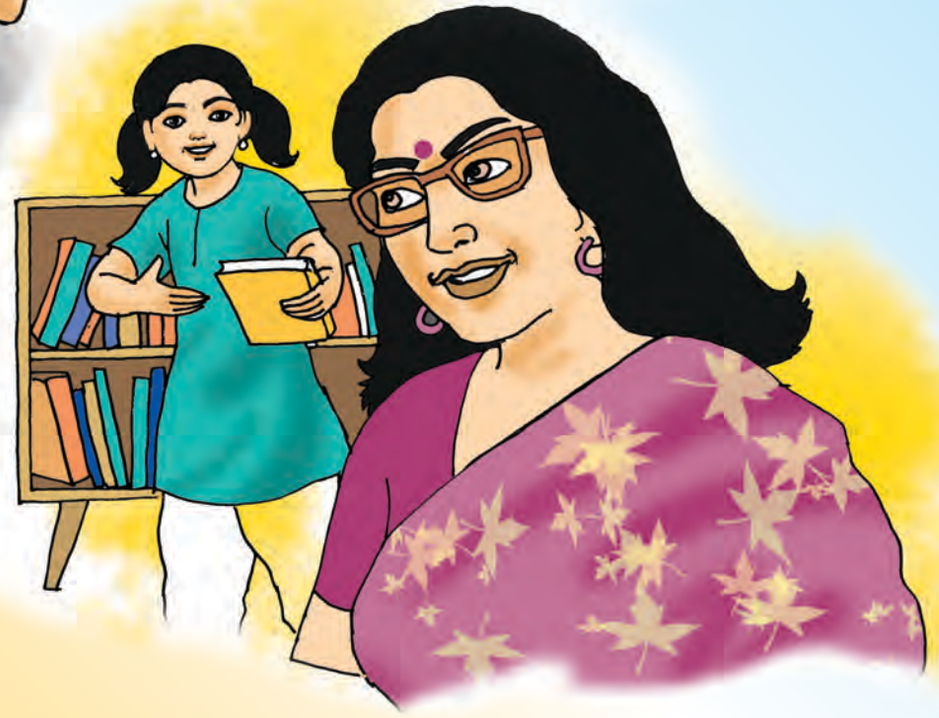

छः ऋतुएँ

बसंत

लाल गुलाबी नीले फूल
जामुनिया और पीले फूल।
हरे-हरे पत्तों में केसरी
बैंगनी बड़े सजीले फूल।

नहीं है ठंडा नहीं गरम
ऋतु बसंत का यह मौसम।
कोयल कूँके कुह-कुह-कुह
साथ-साथ में गाएँ हम।

वर्षा

हुआ अंधेरा छाए बादल
बड़ी दूर से आए बादल।
बरस रहे हैं कब से झम-झम,
कितना पानी लाए बादल।

सारी धरती हरी-हरी।
नदिया, नाली भरी-भरी।
बड़े मजे से वर्षा में,
घूमें हम लेकर छतरी।

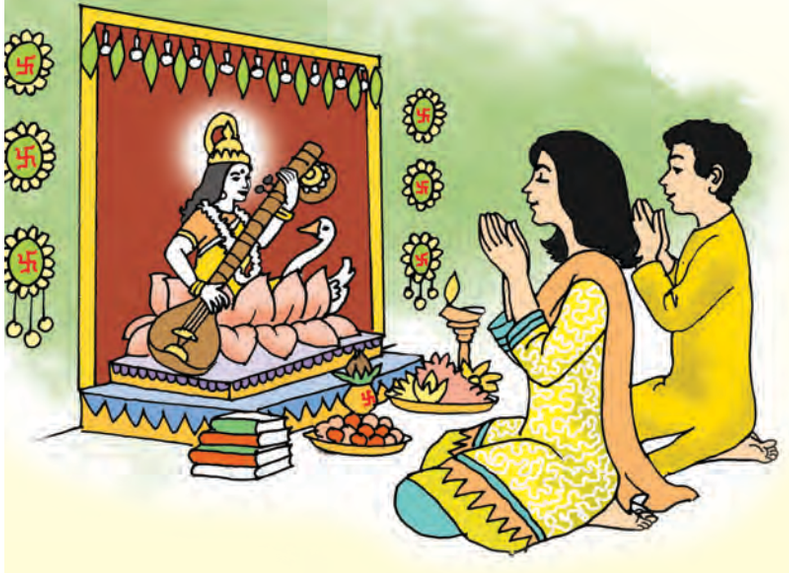

गर्मी

गर्म हवाएं लप्-लप्-लप्
चुए पसीना टप्-टप्-टप्।
आम मिले बस गर्मी में
खाएं मिलकर गप्-गप्-गप्।

भरी गगरिया पानी की
बातें चली कहानी की।
दिन में खेलें रात को गप
सभा जमी है नानी की।

शरद्

ठंडी-ठंडी रात हुई है
चम-चम चमके तारे।
साफ गगन पर खेल रहे हैं
छुपम्-छुपाई सारे।

दिन में धूप गुनगुनी भाती
रात में चंदा भाते।
शरद् पूर्णिमा साथ मनाने
हम सब छत पर जाते।।

शिशिर

शी-शी-शी-शी शूँ-शूँ-शूँ
सीटी देते सबके मुँह।
कोई कहे 'रजाई छोड़ो'
तो बच्चे कहते हैं ऊँह।

मुँह खोलो तो निकले भाप
सभी शिशिर में जाते काँप।
गरमागरम पीयो सब दूध
फूँक-फूँक कर फूँ फूँ फूँ।।

हेमन्त

आई जब हेमंत, हो चली
हवा बहुत बर्फीली।
सुबह ओस से आँगन की
मिट्टी मिलती है गीली।

पत्तों पर मोती के जैसी
चम-चम चमकें बूँदें।
सूरज उठकर भी लगता है
बैठा आँखें मूँदे।

बारह महीने

पहला महीना चैत्र है
फिर वैशाख व ज्येष्ठ।
तब आषाढ़, सावन तथा
आता भादव श्रेष्ठ।
बीते आधा वर्ष,
माह आश्विन है आता।
कार्तिक, अगहन, पौष,
माघ फिर फाल्गुन भाता।।
बारह महीनों को मिला
नक्षत्रों से नाम।
इनसे ही त्यौहार सब,
इनसे सब शुभ काम।।

हमारा नया वर्ष

(चैत्र, शुक्ल प्रतिपदा : गुढ़ी पड़वा)

आज जन्मदिन धरती माँ का, हम नववर्ष मनायेंगे।
बड़े सवेरे उठ, सूरज को जल हम सभी चढ़ाएँगे।।

सतयुग में ब्रह्मा जी ने
इस दिन संसार बनाया था।
राम बने त्रेता में राजा
राम राज्य तब आया था।

बने युधिष्ठिर द्वापर में थे धर्मराज, बतलाएँगे।
आज जन्मदिन धरती माँ का, हम नववर्ष मनाएँगे।।

कलियुग में राजा विक्रम ने
संवत् नया चलाया था।
दयानंद ने वेद हाथ ले
आर्य समाज बनाया था।

संघ बनाने केशव जन्मे, भगवा ध्वज फहराएँगे।
आज जन्मदिन धरती माँ का, हम नववर्ष मनाएँगे।।

रंगों का त्योहार–होली

राक्षस राज हिरण्यकश्यपु के, बेटे थे नन्हे प्रह्लाद
ईश्वर के वे बड़े भक्त थे, करते हर पल हरि को याद।
नहीं पिता को यह भाता? ईश्वर का बड़ा विरोधी था
सोचा मरवा दूं बेटे को, दुष्ट बड़ा ही क्रोधी था।

बिठा होलिका की गोदी में, उसने आग लगायी थी
जरा डरे प्रह्लाद नहीं थे, प्रभु ने जान बचाई थी।
इसी याद में पर्व होली का, मिलकर सभी मनाते हैं
ढोल बजाते, हँसते गाते, रंग गुलाल उड़ाते हैं।।

दीपावली

दीपावली बड़ा त्यौहार।
लिए स्वच्छता का संस्कार।।

एक दूजे से मिलते लोग।
लक्ष्मी पूजा का संयोग।।

दीप जलाते कई हजार।
सजे हुए घर, आँगन, द्वार।।

बने मिठाई लगता भोग।
पाँच पर्व का शुभ संयोग।।

हमारे ऋषि–मुनि

हमारी ऋषि संस्कृति पावन, करें ऋषियों को आओ नमन।
जिनसे सीखा जीवन जीना, संस्कारों का पाया धन।।

तप के बल पर ऋषि अगस्त्य ने, पर्वत विंध्य झुकाया।
कोई असंभव काम न जग में, सागर पी दिखलाया।
मिली दक्षिण को सूर्य किरण।
करें ऋषियों को आओ नमन।।

विश्वामित्र ने राम लखन को, शस्त्र ज्ञान सिखलाया।
जिसके कारण मानवता का, उनने त्रास मिटाया।
असुर मारे जाकर वन-वन।
करें ऋषियों को आओ नमन।।

सान्दीपनि ने कृष्ण सुदामा, दोनों साथ पढ़ाये।
पढ़ना सबके लिए जरूरी, यह सबको समझाये।
धनी हो या चाहे निर्धन।
करें ऋषियों को आओ नमन।।

ऋषियों की गाथा अनेक हैं, आओ बड़ों से जानें।
अपना जीवन श्रेष्ठ बनाएँ ;षियों की संतानें।
रहे यह गौरव सदा स्मरण।
करें ऋषियों को आओ नमन।।

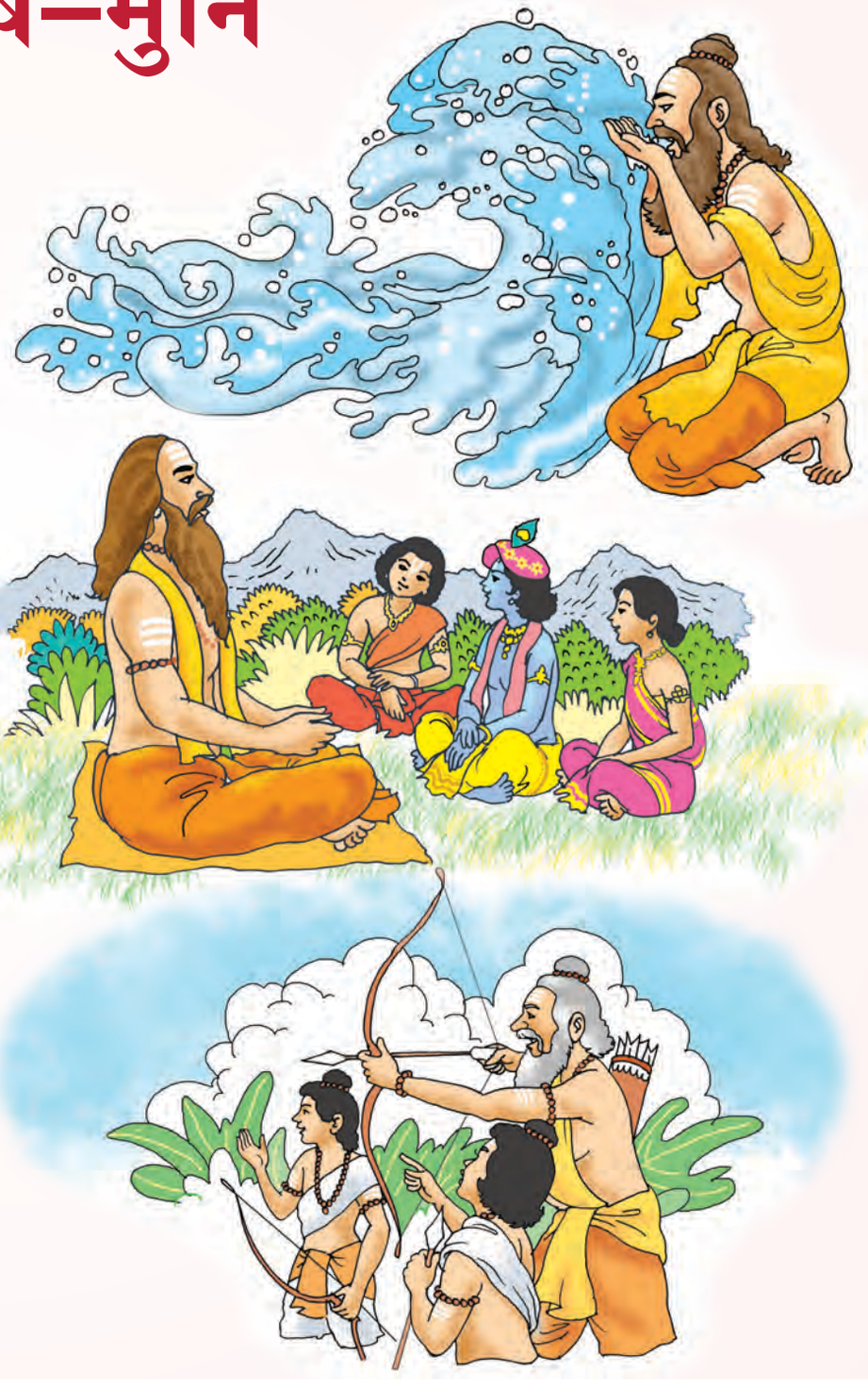

हमारे शास्त्र

वेद स्वयं ब्रह्मा ने गाये।
उपनिषद् ऋषियों का ज्ञान।।
रामायण वाल्मीकि बताये।
महाभारत है ग्रंथ महान।।
श्रीकृष्ण से गीता ज्ञान।
वेदव्यास ने रचे पुराण।।
सभी हमारे पावन ग्रंथ।
दिखलायें जीवन का पंथ।।

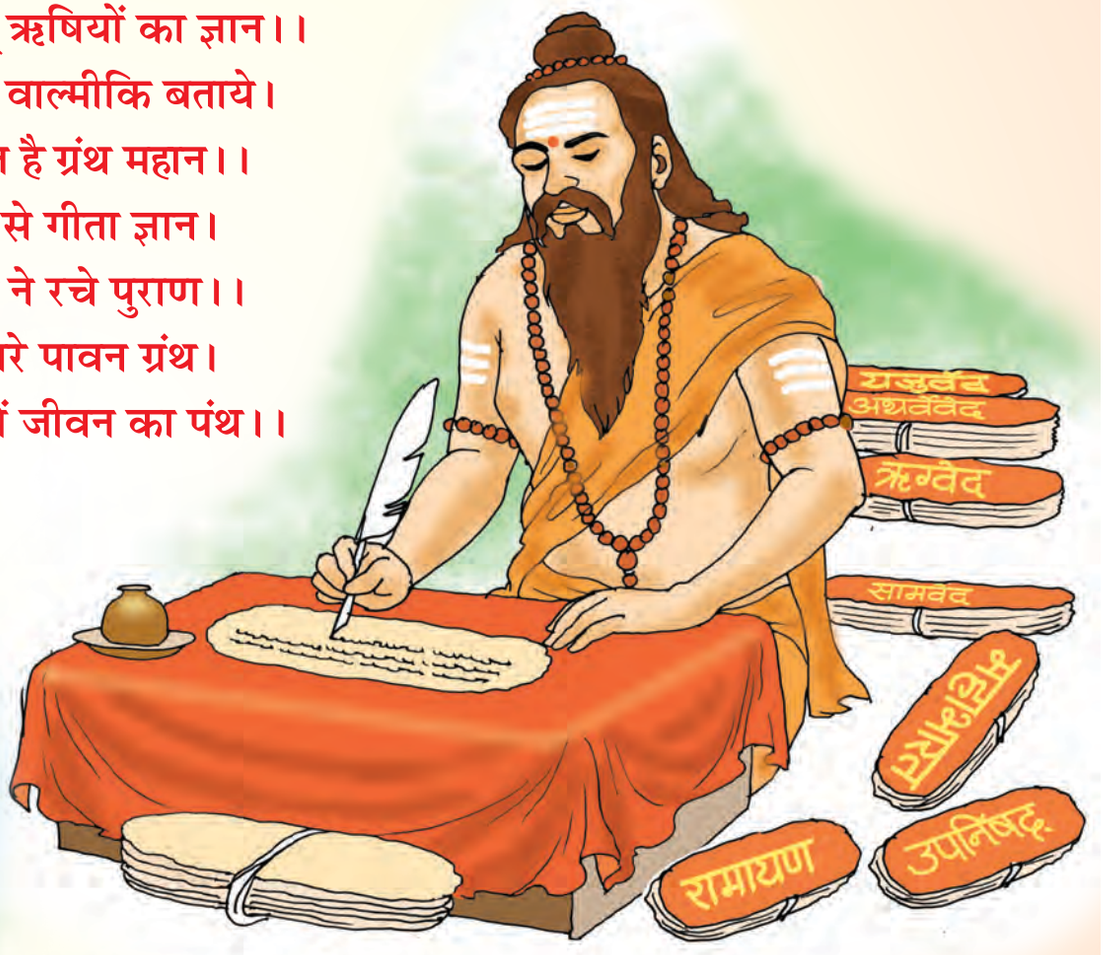

मैं बन जाऊँ राम

तू माता कौसल्या बन जा, मैं तेरा बन जाऊं राम।
देना यह आशीष मुझे माँ! प्रतिदिन तुझको करूँ प्रणाम।।

मैं तेरी, बाबा की सारी, बातें मानूँ बिना विचार।
नहीं स्वार्थी बनूँ कभी भी, रखूँ बड़ा मन, बनूँ उदार।
जो भी सीखूँ देश धर्म के, मानवता के आये काम।
तू माता कौसल्या बन जा, मैं तेरा बन जाऊँ राम।।

गुरु की सेवा करके पाऊँ, शास्त्र शस्त्र विद्या का ज्ञान।
मैं विनम्र भी, बुद्धिमान भी, वीर, साहसी, अति बलवान।
पहले कोई कर न सका जो, करूँ काम मैं बिन विश्राम।
तू माता कौसल्या बन जा मैं तेरा बन जाऊँ राम।।

सबकी करूँ सहाय, बनाऊँ मित्र, न ऊँच-नीच मानूँ।
गाँव, पहाड़, वनों के वासी, सबको अपना ही जानू।
सदा सत्य के पथ पर चलकर, मिलता अच्छा ही परिणाम।
तू माता कौसल्या बन जा, मैं तेरा बन जाऊं राम।।

आदर्शों को धारण करके, मानव बन सकता भगवान।
जब तू रामायण गाती है, सुनता हूँ मैं देकर ध्यान।
मैं भी गाऊँ तेरे संग माँ! पतितपावन सीताराम।
तू माता कौसल्या बन जा, मैं तेरा बन जाऊं राम।।

रणचंडी बन जाऊँ

माँ केसरिया बाना दे दे, रणचंडी बन जाऊँ।
भारत माँ की बेटी होने, का मैं धर्म निभाऊँ।

लक्ष्मीबाई-सी दोनों, हाथों तलवार चलाऊँ।
बनकर दुर्गावती शत्रु की, सेना मार भगाऊँ।

किसी शेरनी के घर में, कैसे सियार घुस आये!
मेरे रहते अँगुल भर भी, सीमा न घट पाये।

मैं भारत की खण्डित मूरत, फिर से पूर्ण करूँगी।
सौ-सौ बार जन्म लूँगी माँ! तेरे लिए मरूँगी।

लेकर साथ सहेली सारी, 'वन्दे मातरम्' गाऊँ।
माँ केसरिया बाना दे दे, रणचंडी बन जाऊँ।

बाल विनय

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देव देव!

तुम्ही पिता हो तुम्ही हो माता
तुम्ही मित्र हो तुम्ही हो भ्राता।
तुम ही विद्या तुम ही धन।
मेरे सब कुछ तुम भगवन्!

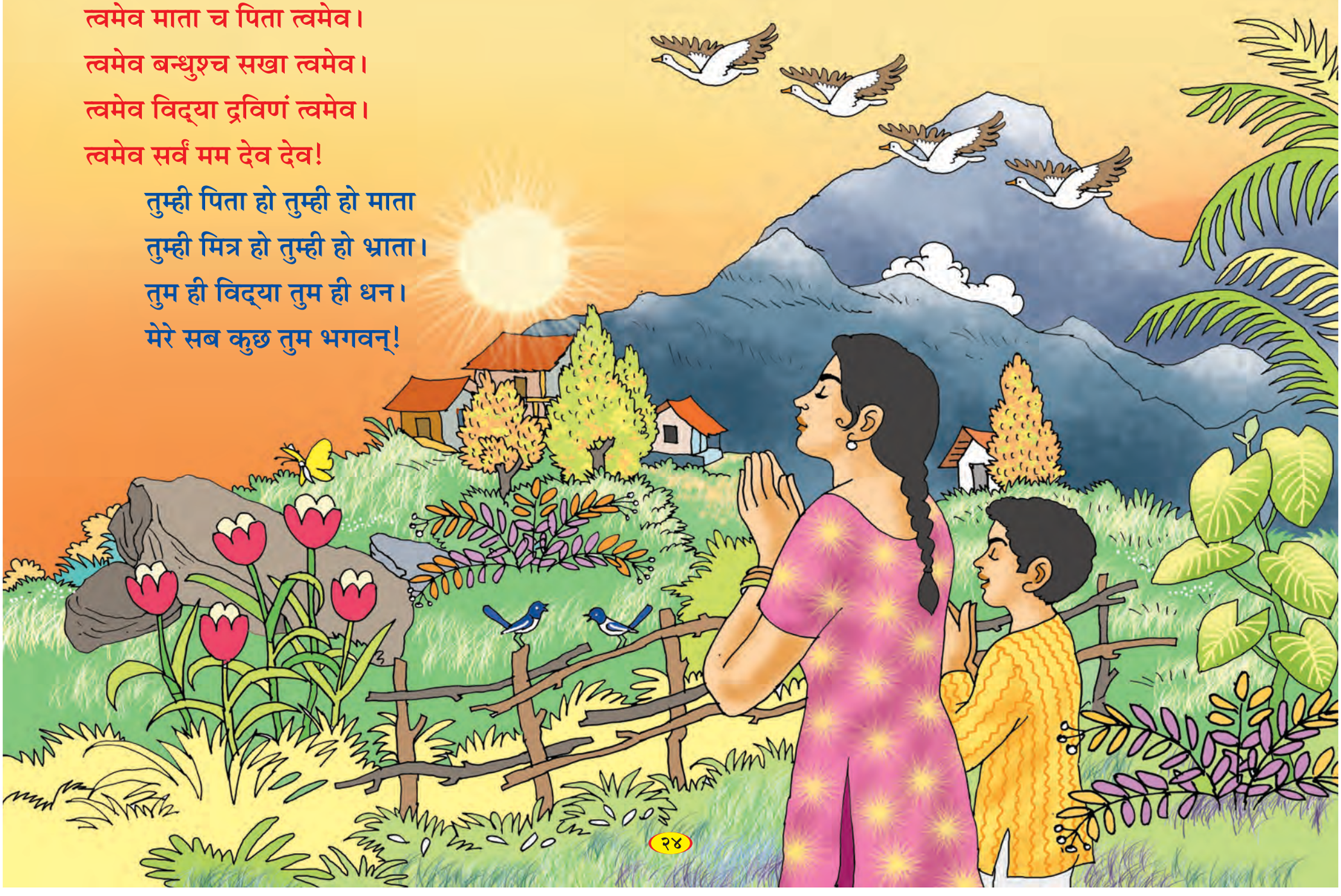

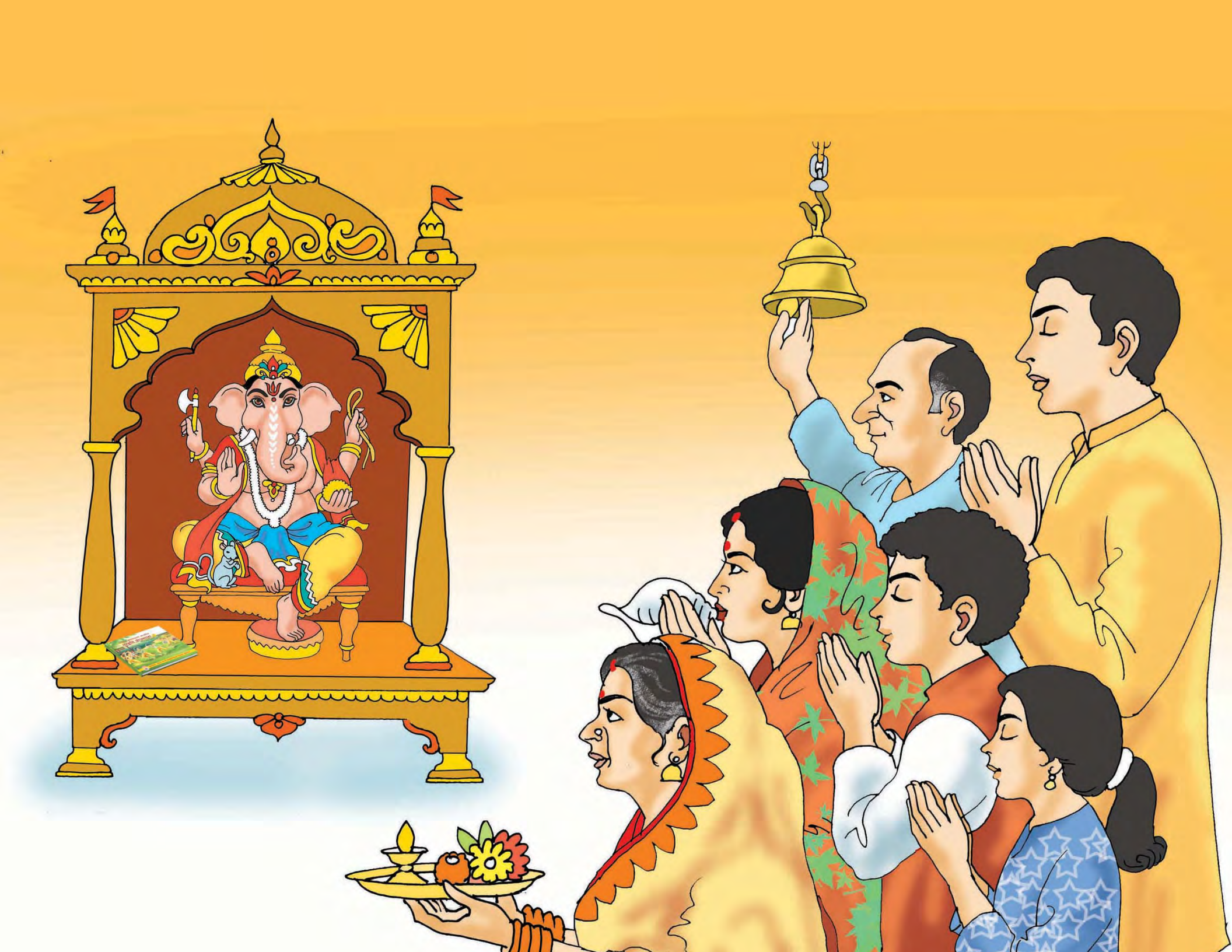

प्रकाशक :

विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान

संस्कृति भवन, जलारपुर रोड, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)

दूरभाष : ०१७४४-२५१९०३, २७०५१५ मोबाइल/व्हाट्सएप्प : ९८१२५२०३०१

sgp@samskritisansthan.org www.samskritisansthan.com vidyabhartikurukshetra vidyabhartisss vbsss kkr

प्रकाशन वर्ष : विक्रम संवत् २०८१, युगाब्द ५१२६ (सन् 2024 ई॰)